

MON 25

TUE 26

WED 27

नागार्जुन का काव्य वैशिष्ट्य

नागार्जुन हिंदी प्रगतिवादी काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में चर्चित एवं प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने जीवनावस्था से प्रेरित होकर प्रगतिशील साहित्य की सृष्टि की थी। उनकी रचनाओं में उनका भोक्ता और रचनाकार दोनों रूप सफलतापूर्वक यथार्थता के साथ चित्रित हुआ। इनका पूरा नाम वैद्यनाथ मिश्र है। नागार्जुन का अन्तर्मन निरन्तर बढ़ते अंधविश्वासों और रूढ़-शक्तियों के प्रति विद्रोही हो गया। साहित्य के क्षेत्र में नागार्जुन सत्ता-व्यवस्था एवं पूर्णपतियों के प्रति व्यंग्यात्मक प्रहार के साथ पदार्पण हुआ। वे जीवन भर संघर्षित एवं याथावरी वृत्त पर अवलम्बित रह कर भी व्यंग्य की प्रवर-चेतना का संचार करते रहे। प्रगतिशील चेतना के संवाहक, मध्यवर्गीय चेतना के सरल विम्बों के प्रस्तुतकर्ता तथा शोषित तथा पीड़ितों की संघर्षी आत्मा के प्रतिरूपक बन कर नागार्जुन अपनी काव्यानुभूति और काव्याभिव्यक्ति में पर्याप्त ईमादार एवं ईश्वरीय चेतना के कवि बने रहे। उनकी कविता जन-सामान्य के दुःख-दर्द तथा पीड़ा एवं छटपटाहट की कविता है। परन्तु इसके साथ ही एक अखण्ड शक्ति और आस्था भी उनकी कविताओं में समाहित है। अपनी दयनीय स्थिति को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया है—

मैं पैदा हुआ दीन-हीन उपछित किसी कृषक कुल में,
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से।

नागार्जुन का कृतित्व प्रगतिशील चेतना का संवाहक है। उनकी काव्य-कृतियों में प्रगतिशीलता विभिन्न कोणों से प्रकट हुई है। इनकी काव्य-यात्रा की धाराएँ तीन रूपों में प्रवाहित हैं—

- (1) वे कविताएँ जो रागात्मक संवेदना को उद्बुद्ध कर सौंदर्यानुभूति व्यक्त करती हैं।
- (2) वे कविताएँ जो सामाजिक विषमता एवं विसंगतियों के साथ-साथ राजनीतिक अव्यवस्था और अंधविश्वासग्रस्त जीवन के यथार्थ का सजीव चित्र अंकित करती हैं।
- (3) वे कविताएँ जो उद्बोधात्मक और प्रचारात्मक हैं। इनकी सभी प्रकार की रचनाएँ इनके इन काव्य-संग्रहों में संगृहीत हैं— युग धारा, सतरंगे पंखों वाली, आधी पग साईं औरों, भस्मांकुर आदि। कुछेक कविताएँ पत्र पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हैं।

OCTOBER 2004

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

‘युग धारा’ सन् 1956 में प्रकाशित नागार्जुन का प्रथम काव्य-संग्रह है। यह एक प्रगतिशील चेतना सम्पन्न कविताओं का व्यापक संग्रह है। इसमें देशभक्तिपूर्ण सजग राष्ट्रीयता को वाणी प्रदान करने वाली ‘शपथ’ और तर्पण जैसी कविताएँ हैं तथा देश व्यापी अकाल, भूखमरी

और शासकों की अक्षमता पर व्यंग्य करने वाली कविता ‘प्रेत का वयान’। ‘तर्पण’ शीर्षक कविता में

THU 28

FRI 29

SAT 30

राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी की हत्या के संदर्भ अपनी भावामिव्यक्ति करते हुए कवि ने लिखा है —

'जिस बर्बर ने / कल किया तुम्हारा खून पिता / वह नही मराठा, हिन्दू है / वह
प्रसी है स्थिर स्वाभिमानी का / वह मानवता का महाशत्रु'

महात्मा गाँधी के नाम पर हो रहे शोषण पर कवि ने व्यंग्यात्मक शैली में लिखा है :

'बेच-बेच कर गाँधी का नाम / बटोरो वोट / बैंक बैलेन्स बढ़ाओ / राजघाट पर बापू की बेदी के
आगे अक्षु बढ़ाओ।'

रवि ठाकुर, चंदना, भाषाणी, मिश्रणी आदि कविताओं में कवि ने महान् कलाकारों और नेताओं के प्रति अपनी व्यापक प्रेक्षा-भावना की अभिव्यक्ति की है। 'मिश्रणी' शीर्षक कविता में जीवन से ऊँचकर जिस मातृत्व-लालसा को प्रकट किया गया है, वह वासनात्मक तन्मया नही, जीवन के प्रति जिजीविषा है। व्यंग्यात्मक शैली में सामाजिक भूमिका पर लिखी गयी इस संग्रह की कविताएँ जीवन के प्रति आस्था, निष्ठा और पूर्ण विश्वास से ओत प्रोत हैं।

सतरंगे परबो वाली' सन् 1959 प्रकाशित नागार्जुन का द्वितीय काव्य-संग्रह है। इस संग्रह की कविताओं में युगधारा की भाव-चैतना के साथ प्रकृति विषयक कतिपय रचनाएँ हैं, जो प्रकृति की मादक-मदिर द्रवियों से ओत प्रोत प्रणय-चित्र अंकित करती हैं। प्रकृति-श्री की गंध विवरित करने वाली कविताओं में 'वसंत की आगवानी, नीम की दो टहनियाँ आदि उल्लेख हैं। प्रकृति परक अन्य कविताओं में काली सप्तमी का चाँद, शरद पूर्णिमा, भुक आये कजारे मेघ, ओ जनमन के सजग चितरे आदि हैं। जिनमें प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश प्रतिबिम्बित है। प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से वसंतगम यद्वा 'वसंत की आगवानी' की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है — 'दूर कहीं अमराई में कोमल बोली / परत लगी चढ़ने भिंगुर की शरनाई पर / वृद्ध वनस्थितियों की हँसी शारवाओं में / पोर-पोर टहनी का लगा दहकने / टेसू निकले मुकुलों के गुच्छे गदराए / अलसी के नीचे फूलों पर नभ मुस्काया।'

इस संग्रह की 'देरवना ओ गंगा मैया' में जहाँ मल्लाहों के जीवन की विवशता-विषमता का और वहीँ 'खुरदरे पैर' में रिकशावाले के जीवन के यथार्थ का चित्रण है — 'एक नही दो नही तीन तीन चक्र / कर रहे थे मात निविक्रम वामन के पुरानी पैरों को / ना पर रहे थे

घरनी का अनहद फास ला / वरों के हिसाब से दोधे जा रहे थे।'
'सौंदर्य प्रतियोगिता 'और' जयति नरव रंजिनी' कविताओं में आज के कुशिम-प्रदर्शन-वृत्ति पर तीव्र व्यंग्य प्रहार किया है।
'जयति नरव रंजिनी' कविता में फेशन परस्त दो स्त्रियाँ इसलिये बोर डालने जाती हैं कि उनकी ऊँगली में काला निशान लगेगा।

NOVEMBER 2004

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MON 1

TUE 2

WED 3

‘प्यासी पथराई और रे’ सन् 1962 ई० में प्रकाशित कवि नागार्जुन का तीसरा काव्य-संग्रह है। इस संग्रह में नागार्जुन का व्यंग्य पूर्व से अधिक तीव्रता, नुकीला और धारदार होता चल गया है। आलोच्य संग्रह की अब तो बंद करो है देवी यह चुनाव प्रश्न, मादा अजगर हो तुम, आक्यों रको कोन आई जे गोंधी मुहत्ता आदि में दोगीयता और प्रादेशिकता पर व्यंग्य तो किया ही है, धिन तो नही आती, पैसा चरक रहा है, काली माई, शकुन्तला, लुनुम्बा और आओ रानी हम दोयेँगे पालकी आदि कविताओं में सामाजिक विषमताओं और वर्ग-वैषम्य से जुद्ध होकर धार्मिक फलीकों के माध्यम से निष्पत्ति पूर्वक व्यंग्य का शर-संधान किया है।

इस संग्रह की कविताओं में नागार्जुन की सोच और उसकी वैदिक अभिव्यक्ति, ईमानदारी और अदम्य सारसिकता उनकी रचना धर्मिता विशिष्ट पहचान है। ‘आओ रानी हम दोयेँगे पालकी’ कविता में इंगलैंड की रानी के आगमन के संदर्भ में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू पर व्यंग्य करते हुए कवि ने लिखा है —

‘आओ रानी हम दोयेँगे पालकी / यही हुई है राय जवाहर लाल की / रफू करेँगे फटे पुराने जाल की / यही हुई है राय जवाहर लाली।’

‘सह उन्मत्त प्रदर्शिन’ कविता में यनिकों की विवाह जैसे अवसरों पर फिजूल खर्ची मिथ्या-प्रदर्शन पर व्यंग्य करते हुए कवि ने लिखा है —

‘शादी क्या है, वैभव का यह उन्मत्त प्रदर्शिन / रेशम की यह चकाचौंध मणि मुक्ता का उद्दीपन / पास पड़ोस उजागर है, बिजली लेती अंगड़ाई / भिरकड़ी है माइकों पर उस्तादों की शरनाई / बिजली की व्यूँ से आस्वर क्या पंडाल सजा है / कौन कहेगा इस सत बस यों ही रुक बजा है।’

‘भस्मांकुर’ नागार्जुन विरचित एक खण्ड काव्य है जो पौराणिक आरव्यान पर आधारित है। कामदेव के प्रभाववश और वसन्त के सहयोग से समस्त परिवेश मादक, सुगंधित और सुरम्य हो गया है। पार्वती शिव को स्वप्न में मिलन मुद्रा में देखती है, तो शिव भी वसन्त के मोड़क मंदिर वातावरण से विस्मित-पुलकित होते हुए पार्वती को प्रेमरंजित दृष्टि से देखता है। उनकी समधि भंग होती है, तो वे उसका कारण जानना चाहते हैं। उन्हें लताओं के अंतराल में कामदेव दिखलाई पड़ता है।

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

‘भस्मांकुर’ शिव का क्रोध जाग जाता है और त्रिनेत्र के खुलने से कामदेव भस्म हो जाता है। रति पति को भस्म हुआ जानकर रति विलाप करने लगती है और मृत्यु का आलिंगन करने के लिए व्यग्र तत्पर हो जाती है। इसी समय आकाशवाणी होती है और मदन का जयघोष सुनाई पड़ता है।

आकाशवाणी से यह भी सूचित होता है कि मदन-कामदेव को कोई नष्ट नहीं कर सकता। वह मनुष्य में तो अदृश्य रूप से सदैव रहेगा। कवि ने मित्र रूप में वसन्त, कामदेव की मदद करना, असमय यौवनभार से लताओं का मुक्त

NOTES

THU 4

FRI 5

SAT 6

और रात्रि के अंतिम पहर में पार्वती का स्वप्न देवना मुनो वैज्ञानिक रूप से स्वाभाविक है तथा मदन-दहन के पश्चात् आकाशवाणी आदि मौलिक उद्भावनाओं के द्वारा पौराणिक आख्यान को नया मोड़ दिया है।

नागार्जुन की काव्य-प्रवृत्तियों को निम्नांकित शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है—
(1) राष्ट्रियता की भावना :

नागार्जुन को मातृभूमि और देश की जनता से अपार प्यार है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में राष्ट्र और लोकमंगल की अभिव्यक्ति हुई है। राष्ट्रियता के प्रतीक देश की आजादी के पुणेया नेताओं और मराठ्याओं के प्रति श्रद्धा-भक्ति प्रकट करते हैं— शपथ और तर्पण में। 'रामराज्य' कविता में वर्तमान की फीड़ा के प्रति दोष, प्रगति के लिए आशा, संघर्ष की तैयारी तथा राष्ट्रीय आस्था को अभिव्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है—

भारत माता के गालों पर कसकर पड़ा तमाचा है।

रामराज्य में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है ॥

उन्होंने 'प्यासी पथराई आंखें' में तिलक की प्रतिमा शीर्षक कविता के अन्तर्गत प्रांतीयता की उपेक्षा कर व्यापक राष्ट्रियता को परिधुष्ट एवं प्रसारित किया है—

'स्थापिता नहीं होगी क्या / लाला लाजपत राय की प्रतिमा मझास में! / दिरवाई नहीं पढ़ेंगे लखनऊ में सत्य मूर्ति / सुभाष और जे० एम० सेन गुप्त क्या सीमित रहेंगे / भवानीपुर और शाम बाजार की दुकानों तक? / तिलक नहीं निकलेंगे पूना से बाहर ॥'

(2) युगीन विषमता की अभिव्यंजना :

नागार्जुन ने समाज में व्याप्त कुशितियों, विकृतियों और विसंगतियों के यथार्थ को निकट से देखा और परखा है। फलतः समस्त भारत में व्याप्त ग्रामीण और नगरीय जीवन की विषमताओं—मजदूरों की विपन्नता और अभावमयी जिंदगी, नगरीय परिवेश में व्याप्त आपाधापी, स्वार्थ परता, यांत्रिकता, शोषण, पूँजीपतियों के अत्याचार आदि विषयों को उन्होंने अक्षरशः रूपायित किया है। भुरवमरी, अकाल, बाढ़, महामारी, मईगाई, बेरोजगारी आदि के वीभत्स चित्रण उन्होंने इन पंक्तियों में किए हैं—

कहीं बाढ़, कहीं भूचाल कहीं पर अकाल कहीं बीमारी / मईगाई की क्या नज़ीर हूँ मैंने
दुपद सुता की साड़ी / भूखों मरो चबाओ पत्ती मगर अन्न का नाम न लेनी /
कहीं न तुम भी पकड़े जाओ कहीं सफाई पड़े न देना।'
'प्यासी पथराई आंखें' की 'आदम का तबेला' शीर्षक कविता में एक मध्यवर्गीय परिवार का करुण चित्र दृष्टव्य है— 'ऊपर देखते हैं बाल्टियों के दर पितरों की प्यासी खड़े / अंगूठा चूसती है नवजात बच्ची, रिबड़की से लटका है लाल खिलौना ॥'

DECEMBER 2004

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
5	6	7	1	2	3	4
12	13	14	8	9	10	11
19	20	21	15	16	17	18
26	27	28	22	23	24	25
			29	30	31	

MON 8

TUE 9

WED 10

(3) शोषितों एवं उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति :

नागार्जुन की अपनी कविताओं में शोषितों और उपेक्षितों के साथ व्यापक सहानुभूति के साथ रक्खे दिखाई पड़ते हैं। 'सिच न बोलना' और 'रामराज्य' ऐसी ही कविता हैं जिनमें कवि पूँजीपतियों के दारुण अत्याचारों से पिथरी जनता के प्रति द्रवित हैं। कवि स्पष्टतः लिखता है — 'रवाही ने मलमल से अपनी साँठ गोंठ कर डाली है / बिड़ला, टाटा और डालमियों की तीसों दिन दीवाली है x x x जमींदार है, साहूकार है बनिया है व्यापारी है / अन्दर अन्दर विकट कसाई, बाहर खदूर घासी है।'।

'घिन आली' कविता में कवि ने कृषकों और मजदूरों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए कवि ने लिखा है — 'कुली मजदूर है बोका दोते है रकीचते है डेला / झुल झुल भाप से पड़ता है सबका पाला / धके सोंदे जहाँ तहाँ सो जाते है देर / सपने में भी सुमते है घरों की घड़कन।'।

(4) आस्था और संकल्प के स्वर :

नागार्जुन ने उपेक्षितों और पीड़ितों की शक्ति को, आस्था और भावना को संकल्प स्वरों में अनुस्यूत करने का प्रयास किया है। 'तुम किशोर तुम तरुण', 'हरे दनुज दल मिटे अमंगल', 'मेरी भी आभा है और लाल भवानी' जैसी कविताओं में आस्था और संकल्प के स्वर गुँथे हुए हैं। 'सतरंगे पंखों वाली' ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं — 'तन जर्जर है भूख-प्यास से / व्यक्ति व्यक्ति दुःख दैन्य ग्रस्त है / दुविधा में समुदाय पस्त है / ले मशाल अब घर-घर को आलोकित कर दो / सँत बने प्रज्ञा प्रयत्न के मध्य / शांति को सर्वमंगला हो जाने दो।'।

'लाल भवानी' शीर्षक कविता की इन पंक्तियों में उपेक्षितों का संकल्प चित्रित है —

'सेठों और जमींदारों को नही मिलेगी एक छदाम / खेत, खान, दुकान मिले, सरकार करेगी दरबल से काम / खेत मजदूरों और किसानों में जमीन बँट जायेगी / नही किसी कसर के लिए खिर पर बेकारी में डरायेगी / नीकर शाही का यह रद्दी ढोंचा शोगा चूरम चूर / सुजलां सुफलां के गायेंगे गीत प्रसन्न किसान-मजूर।'।

(5) व्यंग्य शीलता :

NOVEMBER 2004

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

कवि वर नागार्जुन ने अपनी कविताओं में समाज में व्याप्त कुशलियों, विषमताओं को सशक्त में अभिव्यक्त करने के लिए व्यंग्य शीलता को अस्त्र के रूप में प्रयोग किया है। 'रामराज्य', 'प्रेत का बयान', 'आधे दिन बहार के', 'महाप्रभु जॉनसन के प्रति', 'चंदन और पानी', 'दीपक और बाली', 'विज्ञापन सुन्दरी', 'सौंदर्य प्रतिभोजिता', 'चौराहे के इस नुक्कड़ पर

THU 11

FRI 12

SAT 13

तालाब और मछलियाँ, देखना ओ गंगा मैया आदि कविताओं में राजनीति नेताओं, कोशेरी नेताओं, भारतीय पंचवर्षीय योजनाओं, अतिरिक्त कर प्रणाली, पूँजीपतियों, दयनीय शिक्षकों, किसान परस्तों, कृषिम प्रदर्शनों, सामाजिक-धार्मिक खादियों, साधु रूप में शैतानों और नारी की पराधीनता तीरवा और सूक्ष्म व्यंग्य किया है —

‘आजादी की कलियाँ फूँटी पाँच साल में डोंगे फूल/पाँच साल में फल निकलेगें रहे पतंगी भूला भूल/पाँच साल कम खाओ मैया गम खाओ दस पन्द्रह साल/अपने हाथों से कोंको यों अपनी आँखों में धूल।’

नेरख तथा अन्य नेताओं पर व्यंग्य : ‘हम चावल खाते एक किलो दस का दे आते नोट मगर/यों सिकड़ते रहते, सिलवाते सपने में जूनी कोट मगर/गालियाँ दलकतीं, बैलों की जोड़ी को देते वोट मगर/हम गाँजा डीबेचा करते लेते खादी की ओट मगर/कुछ खुलते खिलते गाल और/तुम रह जाते दस साल और।’

(6) रागात्मक संवेदनशीलता :

नागार्जुन के काव्य में रागात्मक संवेदनशीलता अविष्यंजना की प्रवृत्ति बनकर आई है। उनकी रागात्मकता को मुख्यतः प्रकृति सौंदर्य के अंकन में, मधुर भावों की सांकेतिक व्यंजना में और गौणतः प्रणथामि व्यक्ति में देखा जा सकता है। प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से बादल को चिरते देखा है, वसंत की आगवानी, नीम की दोटडनियाँ, काली सप्तमी की चाँद, शरद पूर्णिमा, भुक आये कजरारे मैव आदि कविताएँ दृष्टव्य हैं :

‘अमल चवल गिर के शिरवरो पर बादल को चिरते देखा है/छोटे मोटे मोती जैसे उसके शीतल तृटिन कणों को/मान सरोवर के उन स्वर्णिम कमलों को गिरते देखा है/बादल को चिरते देखा है।’

नागार्जुनने श्रीलंका, तिब्बत, हिमालय की तराई एवं भारत के अनेक स्थानों में भ्रमण किया है। शिशिर के शीत की प्राणान्तक तेज तीर चुम्बन प्रतीत होती है और इसलिये कवि को वह विषकन्या की तरह दिरवाई देती है — ‘हजार बोंडों वाली शिशिरविषकन्या/उतरी लेकर सौंसे मे प्रलय की वन्या/हिम दग्ध डोंडों के प्राणशोषी चुम्बन/तन मन पर ले पगड़े ज्वाला मय चंदन से परिवर्जित प्रकृति का स्वर’

‘कोयल आज बोली है’ कविता में पक्षवा इवा के थपेड़ों से परिवर्जित प्रकृति का स्वर है। इन पंक्तियों में दृष्टव्य है — ‘दरक गये डोंडों के लों के पात/लेते ही करके तलाब की फुहारें/छिड़कने लगा सूरज।’

नागार्जुन का प्रेम जीवन की अनिवार्यता है। प्रणय का स्वरूप नागार्जुन ने कभी स्वीकार नहीं सहेज, शालीन और धनीत रूप ही कवि को अधिक प्रिय है। प्रेम के उस शिथिल, वासनायुक्त, आलिंगन, चुम्बन और परिरम्भणवाले रूप को नागार्जुन ने कभी स्वीकार नहीं किया —

NOTES

DECEMBER 2004

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

MON 15

TUE 16

WED 17

प्रकृति की पीठिका पर गहरी स्थायी से लिखा हुई ये पंक्तियाँ रसाईता और मायिकता में अनूठी हैं — 'साँध्य नभ में पश्चिमांत समान / लालिमा का जब अरुण आरम्भान / खूना करता मैं सुमुखि उस काल / याद आता है तुम्हारा सिन्दूर तिलकित गाल ।'

नागार्जुन की प्रणय-भावना स्वस्थ, जीवन्त और प्रेरणास्पद है। स्वस्थ

प्रेम की परिचायिका कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं —

'तुम नहीं हो पास, मैं तो तरसता हूँ / प्यार के दो बोल सुनने के लिए / एक की ही दस अँगलियाँ नहीं काफ़ी कदाचित / रेशमी परिवृत्तियों का जाल बुनने के लिए / फिर उन्होंने लिखा है — पास ही सोई पेड़ी शल्य शकुन्तल / प्रेयसी की अपथ पायी दो बड़ी का हमार / इसका रससा पीठ / जग गई तो दिरवा कर तारे बने दो चार / कहा मैंने पकड़ उसका हाथ / ही रहे विदा, गा दो सुमुखि एक बिहारी ।'

=